मदमत्त साम्राज्यवादी हाथी गहरे दलदल की ओर

गीतिका

विश्व प्रभुत्व के मद में चूर अमेरिकी साम्राज्यवाद दुनिया की जनता के जबर्दस्त विरोध से आंखें मूंदे हुए इराकी जनता के कत्लेआम की तैयारियों में जोर-शोर से जुटा हुआ है। सिर से पांव तक खुद जनसंहार के हथियारों से लदे-फंदे अमेरिकी हुक्मरान इराक के पास कथित रूप से मौजूद जनसंहार के हथियारों को नष्ट करने के ऐलान के साथ एक नये जनसंहार की ओर कदम बढ़ा चुके हैं। उसके जंगी बेड़े खाड़ी में कूच कर चुके हैं और उम्मीद की जा रही है कि मध्य फरवरी में इराकी जनता पर कहर टूट सकता है।

जार्ज बुश जूनियर की अगुवाई में हुक्मरान दुनिया को आतंकवाद से मुक्त करने के नाम पर अपने सामराजी मंसूबों को पूरा करने के लिए जिस तरह की नंगई और हेकड़ी दिखा रहे हैं वह बेमिसाल है। संयुक्त राष्ट्र संघ के हथियार निरीक्षकों का अभी अपना 'मिशन' पूरा भी नहीं कर सका है, लेकिन अमेरिकी हुक्मरान पहले से तैयार बैठे हैं कि अगर रिपोर्ट मनमाफिक नहीं आयी तो उसे खारिज कर इराक पर हमला बोल देंगे। वह भी तब जबकि इराकी सरकार हथियार निरीक्षकों के दल को पूरा सहयोग कर रही है और उसने संयुक्त राष्ट्र संघ की तय सीमा के भीतर देश में मौजूद हथियारों और भावी हथियार कार्यक्रमों का पूरा लिखित ब्यौरा भी हथियार निरीक्षकों को सौंप दिया है।

दरअसल अमेरिकी शासकों को हथियार निरीक्षक दल में घुसे अपने जासूसों के जरिये यह भान हो चला है कि रिपोर्ट उनकी मनमाफिक नहीं आने वाली है। दल के प्रमुख हांस ब्लिक्स भी अब तक कई सार्वजनिक बयानों में यह स्वीकार कर चुके हैं कि इराकी सरकार उन्हें पूरा सहयोग कर रही है। लेकिन फिर भी बुश-ब्लेयर और उनकी जंगजू मण्डली ने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया है कि इराक तथ्यों को छुपा रहा है। इराक सरकार द्वारा निरीक्षक दल को सौंपी गयी रिपोर्ट का अध्ययन करने के बाद और इराक के भीतर निरीक्षण की प्राथमिक रिपोर्ट 27 जनवरी '03 को संयुक्त राष्ट्र सभा के समक्ष पेश होनी है पर मगरूर अमेरिकी हुक्मरानों को इन औपचारिकताओं से भला क्या लेना-देना? इराक सरकार की लिखित रिपोर्ट हासिल करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यालय से कोलम्बिया प्रतिनिधि (कोलम्बिया इस समय संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष है) पर धौंसपट्टी जमाते हुए, ब्लैकमेलिंग करते हुए अमेरिकी अधिकारियों ने इराकी रिपोर्ट की फोटो कापी हासिल कर ली। 'शीतयुद्ध' के बाद की दुनिया में संयुक्त राष्ट्र संघ की नपुंसकता देखिए कि अपने दफ्तर में दिनदहाड़े डाली गयी इस डकैती के खिलाफ वह कुछ नहीं कर सका।

अमेरिकी हुक्मरान इराक पर इकतरफा हमला करने और वहां कत्लेआम मचाने का मन पहले से ही बना चुके हैं। 'आतंकवाद के खिलाफ बेमियादी जंग' की मुहिम के तहत अफगानिस्तान के बाद अगला निशाना इराकी जनता होगी, यह अफगानिस्तान में नयी सरकार बनने की प्रक्रिया शुरू होने के समय से ही साफ हो चुका था। इराक-ईरान-उत्तर कोरिया को "शैतानी धुरी" घोषित करने के पीछे "शैतानी कहर" से दुनिया को बचाना नहीं वरन दुनिया की जनता पर अमेरिकी शैतान का कहर बरपा करने का मंसूबा ही काम कर रहा है।

दरअसल, अफगानिस्तान में अपनी पिट्ठू सरकार कायम कर लेने और इसके जरिये मध्य एशिया में अपना एक महत्वपूर्ण मिलिटरी चेक पोस्ट सुरक्षित कर लेने के बाद अमेरिकी हुक्मरानों का मंसूबा समूचे पश्चिम एशिया की भू राजनीतिक शक्ल को बदल देना है। इराक पर हमला करने और सद्दाम हुसैन का तख्तापलट करने के पीछे इराकी तेल भण्डारों पर कब्जा जमाने के बुनियादी मंसूबे के साथ-साथ अनेक राजनीतिक-सामरिक मंसूबे काम कर रहे हैं। अमेरिकी हुक्मरान यह अच्छी तरह समझ चुके हैं कि इराक में सद्दाम हुसैन की सत्ता के बने रहते फिलिस्तीनी राष्ट्र के सवाल को भी वे अधिक से अधिक अपनी अनुकूल शर्तों पर नहीं हल करा सकते। इसके साथ ही अमेरिकी शासक इराक में अपनी पिट्ठू सरकार कायम कर खाड़ी के अपने पुराने पिट्ठुओं (सऊदी अरब, कुवैत आदि शेखशाहियों) पर निर्भरता भी कम करना चाहते हैं। मुख्तसर यह कि वे पश्चिम एशिया में 'नयी व्यवस्था' कायम करना चाहते हैं।

पर दुनिया पर एकतरफा अपने मंसूबों को थोपने के रास्ते में फिलहाल अमेरिका के दूसरे साम्राज्यवादी बिरादर ही तरह-तरह से अड़ंगे डाल रहे हैं। स्थिति यह है कि इराक पर हमले के सवाल पर वह एकदम अलग-थलग पड़ चुका है। फ्रांस, जर्मनी, रूस से लेकर यूरोपीय समुदाय के अधिकांश देश और तीसरी दुनिया के बुर्जुआ शासक भी अमेरिका के एकतरफा हमले का समर्थन-सहयोग करने के लिए तैयार नहीं दिख रहे हैं। अमेरिकी योजना को आंख मूंदकर समर्थन देने वाले ब्रिटेन के हुक्मरान भी अब हिचकिचाने लगे हैं। दरअसल एक तो वे पश्चिम एशिया में एकछत्र अमेरिकी चौधराहट के खिलाफ है और दूसरे इराक पर हमले के खिलाफ जिस तरह समूची दुनिया में जनता का जबर्दस्त विरोध उठ खड़ा हुआ है उससे वे भयाक्रान्त हो उठे हैं। खाड़ी के देशों में अमेरिकी साम्राज्यवादियों के खिलाफ आक्रोश की ज्वाला धधक ही रही है खुद अमेरिका और यूरोपीय समुदाय के भीतर युद्ध विरोधी प्रदर्शनों की बाढ़ आ गयी है। लन्दन-पेरिस-बान-रोम से लेकर न्यूयार्क-वाशिंगटन-कैलीफोर्निया तक जनता इराकी जनता के संहार के मंसूबों के खिलाफ मुट्ठियां ताने हुए है। खाड़ी के अमेरिकी पिट्ठुओं को दुःस्वप्न सताने लगा है, इसीलिए वे अमेरिका से सब्र करने की अपीलें कर रहे हैं।

लेकिन फिलहाल जंग की अमेरिकी तैयारियों को देखते हुए इस बात की उम्मीद कम ही दिख रही है कि वह अपने कदम पीछे हटायें अपने घरेलू आर्थिक-राजनीतिक संकटों के भंवर में फंसे अमेरिकी हुक्मरान इतने बदहवास और मदान्ध हो चुके हैं कि दुनिया की जनता के विरोध और अपने बिरादरों की अड़ंगेबाजियों के बावजूद वे आत्मघाती राह पर आगे बढ़ते ही जा रहे हैं। लेकिन अंजाम से बेखबर अमेरिकी हुक्मरान उत्तर कोरिया के खिलाफ भी आस्तीनें चढ़ाना शुरू कर चुके हैं। यह अलग बात है कि उत्तर कोरिया के शासकों पर इस बन्दरघुड़की का असर होने की बजाय वे अमेरिकी शासकों के फसान का फायदा उठाते हुए जवाबी धमकियां दे रहे हैं।

इस बात की पूरी सम्भावना है कि अगर अमेरिकी शासकों ने इराक पर हमले की साम्राज्यवादी मूर्खता की तो यह अरब जनता की साम्राज्यवाद विरोधी भावनाओं के अभूतपूर्व विस्फोट को जन्म देंगी जिसका नतीजा उनके लिए कोरिया-वियतनाम युद्ध की तरह भयानक दुःस्वप्न बन सकता है। हो सकता है कि किसी सूरत में बुश एण्ड कम्पनी इराक पर हमले का इरादा टाल दे, लेकिन फिलहाल दिख यही रहा है कि मदमत्त साम्राज्यवादी हाथी झूमता-झामता एक गहरे दलदल की ओर अग्रसर है।

17 जनवरी, 2003 ●